



Himanshu Puri

06 Jun 2003

02:45 AM

Amla

Model: Web-MyKundli

Order No: 119450501

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 5-06/06/2003
दिन _____: गुरु-शुक्रवार
जन्म समय _____: 02:45:00 घंटे
इष्ट _____: 52:41:12 घटी
स्थान _____: Amla
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 21:24:00 उत्तर
रेखांश _____: 76:42:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:23:12 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 02:21:48 घंटे
वेलान्तर _____: 00:01:38 घंटे
साम्पातिक काल _____: 19:17:20 घंटे
सूर्योदय _____: 05:40:31 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:02:49 घंटे
दिनमान _____: 13:22:18 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: ग्रीष्म
सूर्य के अंश _____: 20:53:48 वृष
लग्न के अंश _____: 01:06:03 मेष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मेष - मंगल
राशि-स्वामी _____: कर्क - चन्द्र
नक्षत्र-चरण _____: आश्लेषा - 3
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: व्याघात
करण _____: कौलव
गण _____: राक्षस
योनि _____: मार्जार
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: डे-डेविड
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मिथुन

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1925	ज्येष्ठ	16
पंजाबी	संवत : 2060	ज्येष्ठ	23
बंगाली	सन् : 1410	ज्येष्ठ	22
तमिल	संवत : 2060	वैकासी	23
केरल	कोल्लम : 1178	इदवम	23
नेपाली	संवत : 2060	ज्येष्ठ	23
चैत्रादि	संवत : 2060	ज्येष्ठ	शुक्ल 6
कार्तिकादि	संवत : 2060	ज्येष्ठ	शुक्ल 6

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 5
तिथि समाप्ति काल _____ : 15:47:20
जन्म तिथि _____ : 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पुष्य
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 08:45:03 घंटे
जन्म योग _____ : आश्लेषा
सूर्योदय कालीन योग _____ : ध्रुव
योग समाप्ति काल _____ : 14:12:18 घंटे
जन्म योग _____ : व्याघात
सूर्योदय कालीन करण _____ : बालव
करण समाप्ति काल _____ : 15:47:20 घंटे
जन्म करण _____ : कौलव
भयात _____ : 44:59:53
भभोग _____ : 61:22:19
भोग्य दशा काल _____ : बुध 4 वर्ष 6 मा 26 दि

घात चक्र

मास _____ : पौष
तिथि _____ : 2-7-12
दिन _____ : बुधवार
नक्षत्र _____ : अनुराधा
योग _____ : व्याघात
करण _____ : नाग
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मेष
लग्न _____ : तुला
सूर्य _____ : सिंह
चन्द्र _____ : सिंह
मंगल _____ : कन्या
बुध _____ : मिथुन
गुरु _____ : तुला
शुक्र _____ : वृश्चिक
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : धनु

Astrologer Sourabh Tripathi

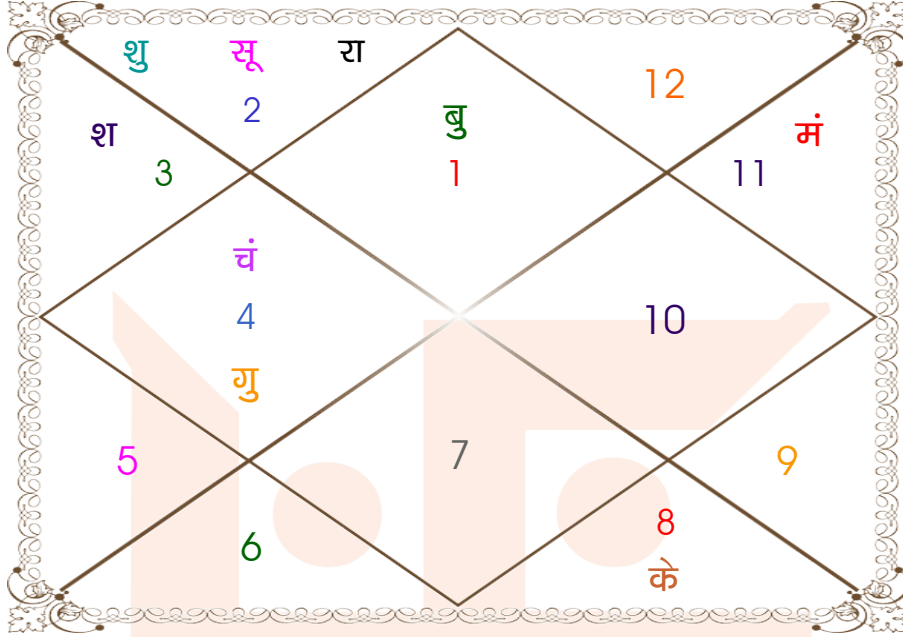
Astrology | Vastu | Gems Stone

+91-702-455-1008

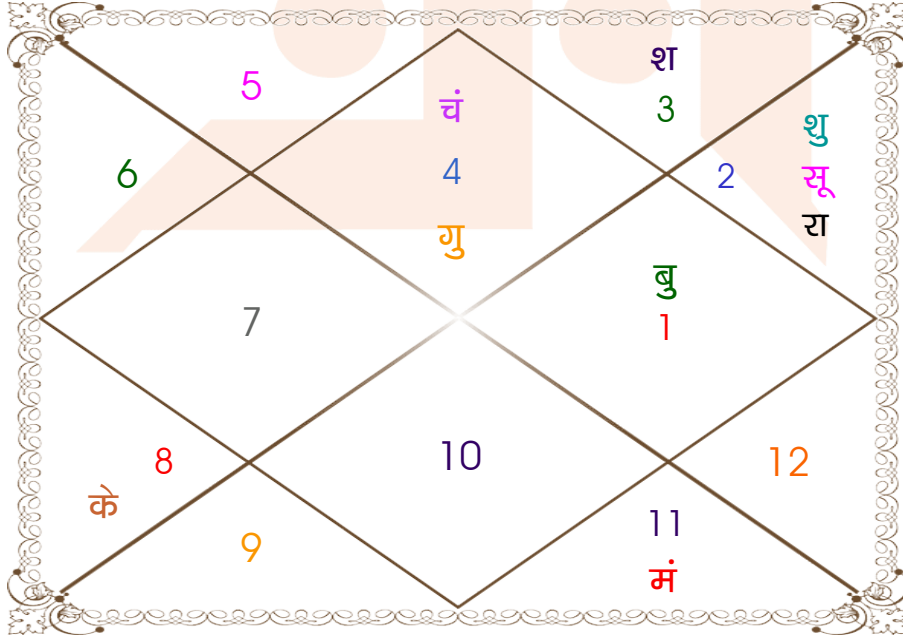
P.sjk1008@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Astrologer Sourabh Tripathi

Astrology | Vastu | Gems Stone

+91-702-455-1008

P.sjk1008@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

	बु ल	रा सू शु	श
मं			गु चं
	के		

लग्न कुंडली

रा शु सू	बु ल	
श		मं
गु चं		
		के

विंशोत्तरी
बुध 4वर्ष 6मा 26दि
बुध

06/06/2003

02/01/2111

बुध	01/01/2008
केतु	01/01/2015
शुक्र	01/01/2035
सूर्य	31/12/2040
चन्द्र	01/01/2051
मंगल	31/12/2057
राहु	01/01/2076
गुरु	01/01/2092
शनि	02/01/2111

योगिनी
भ्रामरी 1वर्ष 0मा 27दि
संकटा

03/07/2022

03/07/2030

संकटा	12/04/2024
मंगला	03/07/2024
पिंगला	12/12/2024
धान्या	12/08/2025
भ्रामरी	03/07/2026
भद्रिका	13/08/2027
उल्का	12/12/2028
सिद्धा	03/07/2030

Astrologer Sourabh Tripathi

Astrology | Vastu | Gems Stone

+91-702-455-1008

P.sjk1008@gmail.com

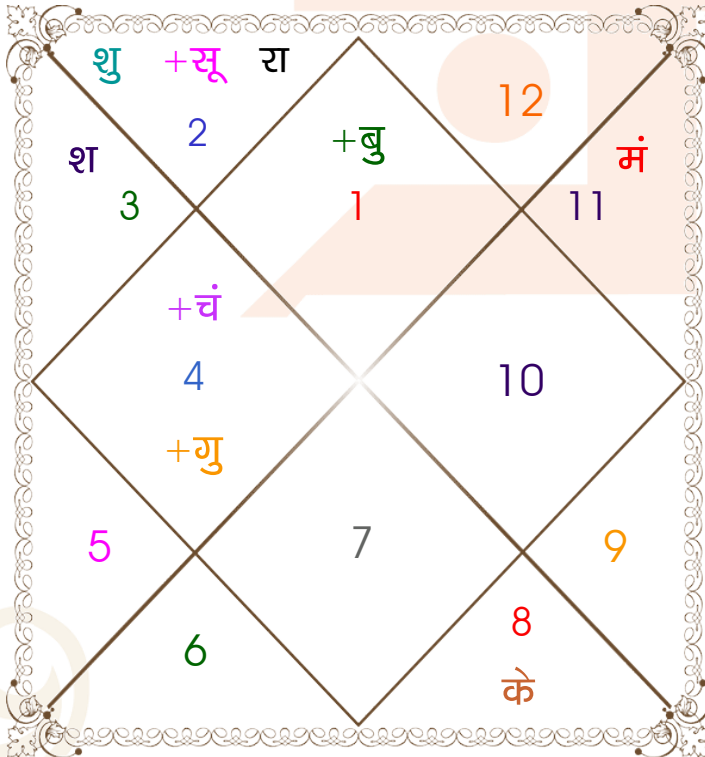
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	01:06:03	452:56:59	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	शुक्र	---
सूर्य			वृष	20:53:48	00:57:26	रोहिणी	4	4	शुक्र	चंद्र	शुक्र	शत्रु राशि
चंद्र			कर्क	26:24:49	13:06:08	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	गुरु	स्वराशि
मंगल			कुंभ	00:59:40	00:28:59	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	बुध	सम राशि
बुध			मेष	26:53:20	01:05:49	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	सूर्य	सम राशि
गुरु			कर्क	19:37:37	00:09:27	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	शुक्र	उच्च राशि
शुक्र			वृष	00:54:50	01:12:59	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	राहु	स्वराशि
शनि			मिथु	06:19:50	00:07:38	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगल	चंद्र	मित्र राशि
राहु	व		वृष	05:28:30	00:01:37	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	बुध	मित्र राशि
केतु	व		वृश्चि	05:28:30	00:01:37	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	बुध	मित्र राशि
हर्ष			कुंभ	08:55:08	00:00:04	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	---
नेप	व		मक	19:10:12	00:00:39	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	---
प्लूटो	व		वृश्चि	24:48:33	00:01:36	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	---
दशम भाव			धनु	23:56:24	--	पूर्वाषाढा	--	20	गुरु	शुक्र	शनि	--

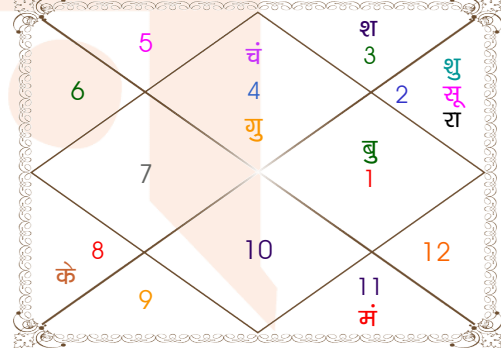
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:54:03

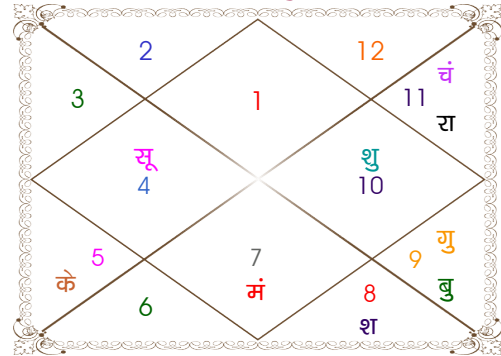
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Astrologer Sourabh Tripathi

Astrology | Vastu | Gems Stone

+91-702-455-1008

P.sjk1008@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मीन 14:54:26	मेष 01:06:03
2	मेष 14:54:26	मेष 28:42:50
3	वृष 12:31:14	वृष 26:19:37
4	मिथुन 10:08:01	मिथुन 23:56:24
5	कर्क 10:08:01	कर्क 26:19:37
6	सिंह 12:31:14	सिंह 28:42:50
7	कन्या 14:54:26	तुला 01:06:03
8	तुला 14:54:26	तुला 28:42:50
9	वृश्चिक 12:31:14	वृश्चिक 26:19:37
10	धनु 10:08:01	धनु 23:56:24
11	मकर 10:08:01	मकर 26:19:37
12	कुम्भ 12:31:14	कुम्भ 28:42:50

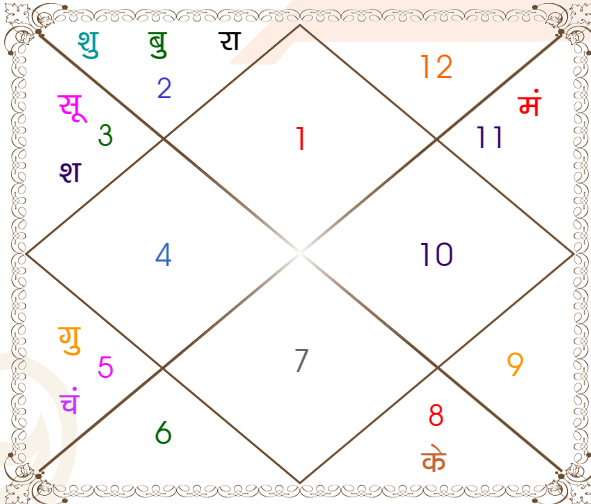
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मेष	01:06:03
2	वृष	03:02:07
3	वृष	29:16:17
4	मिथुन	23:56:24
5	कर्क	20:45:01
6	सिंह	23:01:54
7	तुला	01:06:03
8	वृश्चिक	03:02:07
9	वृश्चिक	29:16:17
10	धनु	23:56:24
11	मकर	20:45:01
12	कुम्भ	23:01:54

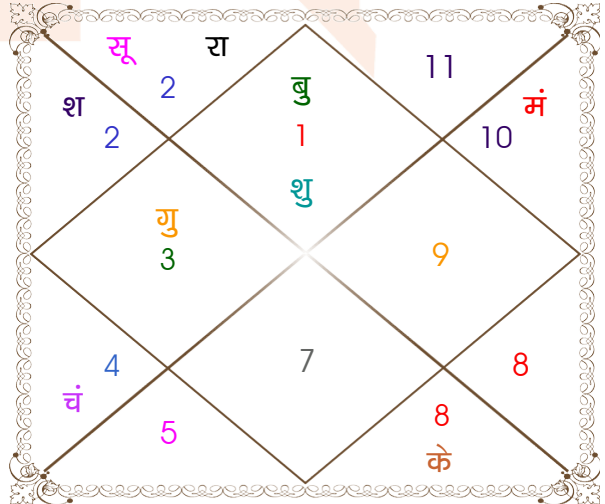
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Astrologer Sourabh Tripathi

Astrology | Vastu | Gems Stone

+91-702-455-1008

P.sjk1008@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 4 वर्ष 6 मास 26 दिन

बुध 17 वर्ष 06/06/2003 01/01/2008	केतु 7 वर्ष 01/01/2008 01/01/2015	शुक्र 20 वर्ष 01/01/2015 01/01/2035	सूर्य 6 वर्ष 01/01/2035 31/12/2040	चंद्र 10 वर्ष 31/12/2040 01/01/2051
00/00/0000	केतु 29/05/2008	शुक्र 02/05/2018	सूर्य 20/04/2035	चंद्र 31/10/2041
00/00/0000	शुक्र 29/07/2009	सूर्य 02/05/2019	चंद्र 20/10/2035	मंगल 01/06/2042
00/00/0000	सूर्य 04/12/2009	चंद्र 31/12/2020	मंगल 25/02/2036	राहु 01/12/2043
00/00/0000	चंद्र 05/07/2010	मंगल 02/03/2022	राहु 18/01/2037	गुरु 01/04/2045
00/00/0000	मंगल 01/12/2010	राहु 02/03/2025	गुरु 06/11/2037	शनि 01/11/2046
00/00/0000	राहु 20/12/2011	गुरु 01/11/2027	शनि 19/10/2038	बुध 01/04/2048
06/06/2003	गुरु 24/11/2012	शनि 01/01/2031	बुध 26/08/2039	केतु 31/10/2048
गुरु 23/04/2005	शनि 03/01/2014	बुध 31/10/2033	केतु 01/01/2040	शुक्र 02/07/2050
शनि 01/01/2008	बुध 01/01/2015	केतु 01/01/2035	शुक्र 31/12/2040	सूर्य 01/01/2051
मंगल 7 वर्ष 01/01/2051 31/12/2057	राहु 18 वर्ष 31/12/2057 01/01/2076	गुरु 16 वर्ष 01/01/2076 01/01/2092	शनि 19 वर्ष 01/01/2092 02/01/2111	बुध 17 वर्ष 02/01/2111 00/00/0000
मंगल 30/05/2051	राहु 12/09/2060	गुरु 18/02/2078	शनि 04/01/2095	बुध 30/05/2113
राहु 16/06/2052	गुरु 06/02/2063	शनि 31/08/2080	बुध 13/09/2097	केतु 27/05/2114
गुरु 23/05/2053	शनि 13/12/2065	बुध 07/12/2082	केतु 23/10/2098	शुक्र 27/03/2117
शनि 02/07/2054	बुध 01/07/2068	केतु 13/11/2083	शुक्र 23/12/2101	सूर्य 01/02/2118
बुध 29/06/2055	केतु 20/07/2069	शुक्र 14/07/2086	सूर्य 05/12/2102	चंद्र 03/07/2119
केतु 25/11/2055	शुक्र 20/07/2072	सूर्य 02/05/2087	चंद्र 05/07/2104	मंगल 29/06/2120
शुक्र 24/01/2057	सूर्य 13/06/2073	चंद्र 31/08/2088	मंगल 14/08/2105	राहु 17/01/2123
सूर्य 01/06/2057	चंद्र 13/12/2074	मंगल 07/08/2089	राहु 20/06/2108	गुरु 07/06/2123
चंद्र 31/12/2057	मंगल 01/01/2076	राहु 01/01/2092	गुरु 02/01/2111	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 4 वर्ष 6 मा 13 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Astrologer Sourabh Tripathi

Astrology | Vastu | Gems Stone

+91-702-455-1008

P.sjk1008@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - गुरु 02/03/2025 01/11/2027	शुक्र - शनि 01/11/2027 01/01/2031	शुक्र - बुध 01/01/2031 31/10/2033	शुक्र - केतु 31/10/2033 01/01/2035	सूर्य - सूर्य 01/01/2035 20/04/2035
गुरु 10/07/2025 शनि 11/12/2025 बुध 28/04/2026 केतु 24/06/2026 शुक्र 03/12/2026 सूर्य 21/01/2027 चंद्र 12/04/2027 मंगल 08/06/2027 राहु 01/11/2027	शनि 02/05/2028 बुध 13/10/2028 केतु 19/12/2028 शुक्र 30/06/2029 सूर्य 27/08/2029 चंद्र 01/12/2029 मंगल 07/02/2030 राहु 30/07/2030 गुरु 01/01/2031	बुध 27/05/2031 केतु 26/07/2031 शुक्र 15/01/2032 सूर्य 07/03/2032 चंद्र 01/06/2032 मंगल 31/07/2032 राहु 03/01/2033 गुरु 21/05/2033 शनि 31/10/2033	केतु 25/11/2033 शुक्र 04/02/2034 सूर्य 26/02/2034 चंद्र 02/04/2034 मंगल 27/04/2034 राहु 30/06/2034 गुरु 26/08/2034 शनि 01/11/2034 बुध 01/01/2035	सूर्य 06/01/2035 चंद्र 15/01/2035 मंगल 22/01/2035 राहु 07/02/2035 गुरु 22/02/2035 शनि 11/03/2035 बुध 26/03/2035 केतु 02/04/2035 शुक्र 20/04/2035
सूर्य - चंद्र 20/04/2035 20/10/2035	सूर्य - मंगल 20/10/2035 25/02/2036	सूर्य - राहु 25/02/2036 18/01/2037	सूर्य - गुरु 18/01/2037 06/11/2037	सूर्य - शनि 06/11/2037 19/10/2038
चंद्र 05/05/2035 मंगल 16/05/2035 राहु 12/06/2035 गुरु 07/07/2035 शनि 05/08/2035 बुध 30/08/2035 केतु 10/09/2035 शुक्र 11/10/2035 सूर्य 20/10/2035	मंगल 27/10/2035 राहु 15/11/2035 गुरु 02/12/2035 शनि 23/12/2035 बुध 10/01/2036 केतु 17/01/2036 शुक्र 08/02/2036 सूर्य 14/02/2036 चंद्र 25/02/2036	राहु 14/04/2036 गुरु 28/05/2036 शनि 19/07/2036 बुध 03/09/2036 केतु 22/09/2036 शुक्र 16/11/2036 सूर्य 03/12/2036 चंद्र 30/12/2036 मंगल 18/01/2037	गुरु 26/02/2037 शनि 14/04/2037 बुध 25/05/2037 केतु 11/06/2037 शुक्र 30/07/2037 सूर्य 13/08/2037 चंद्र 07/09/2037 मंगल 24/09/2037 राहु 06/11/2037	शनि 31/12/2037 बुध 19/02/2038 केतु 11/03/2038 शुक्र 08/05/2038 सूर्य 25/05/2038 चंद्र 23/06/2038 मंगल 13/07/2038 राहु 03/09/2038 गुरु 19/10/2038
सूर्य - बुध 19/10/2038 26/08/2039	सूर्य - केतु 26/08/2039 01/01/2040	सूर्य - शुक्र 01/01/2040 31/12/2040	चंद्र - चंद्र 31/12/2040 31/10/2041	चंद्र - मंगल 31/10/2041 01/06/2042
बुध 02/12/2038 केतु 21/12/2038 शुक्र 10/02/2039 सूर्य 26/02/2039 चंद्र 24/03/2039 मंगल 11/04/2039 राहु 27/05/2039 गुरु 08/07/2039 शनि 26/08/2039	केतु 02/09/2039 शुक्र 24/09/2039 सूर्य 30/09/2039 चंद्र 11/10/2039 मंगल 18/10/2039 राहु 06/11/2039 गुरु 23/11/2039 शनि 14/12/2039 बुध 01/01/2040	शुक्र 02/03/2040 सूर्य 20/03/2040 चंद्र 19/04/2040 मंगल 11/05/2040 राहु 04/07/2040 गुरु 22/08/2040 शनि 19/10/2040 बुध 10/12/2040 केतु 31/12/2040	चंद्र 25/01/2041 मंगल 12/02/2041 राहु 30/03/2041 गुरु 09/05/2041 शनि 27/06/2041 बुध 09/08/2041 केतु 26/08/2041 शुक्र 16/10/2041 सूर्य 31/10/2041	मंगल 13/11/2041 राहु 15/12/2041 गुरु 12/01/2042 शनि 15/02/2042 बुध 17/03/2042 केतु 30/03/2042 शुक्र 04/05/2042 सूर्य 15/05/2042 चंद्र 01/06/2042

Astrologer Sourabh Tripathi

Astrology | Vastu | Gems Stone

+91-702-455-1008

P.sjk1008@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	8
मित्र अंक	3, 4, 6, 9, 8
शत्रु अंक	1, 7,
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

Astrologer Sourabh Tripathi

Astrology | Vastu | Gems Stone

+91-702-455-1008

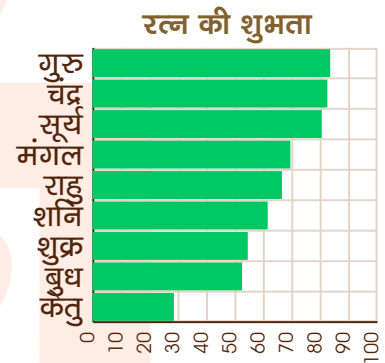
P.sjk1008@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	83%	सुख, भाग्योदय, कम खर्च
मोती	चंद्र	82%	सुख
माणिक्य	सूर्य	80%	धन, सन्तति सुख
मूंगा	मंगल	69%	धनार्जन, स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
गोमेद	राहु	66%	धन
नीलम	शनि	61%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
हीरा	शुक्र	54%	धन, दम्पति
पन्ना	बुध	52%	स्वास्थ्य, पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति
लहसुनिया	केतु	28%	दुर्घटना, हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	01/01/2008	86%	70%	69%	64%	83%	61%	61%	66%	28%
केतु	01/01/2015	67%	70%	75%	52%	83%	61%	47%	53%	52%
शुक्र	01/01/2035	67%	70%	69%	58%	83%	67%	67%	72%	41%
सूर्य	31/12/2040	92%	89%	75%	52%	89%	34%	47%	53%	3%
चंद्र	01/01/2051	86%	95%	69%	58%	83%	54%	61%	53%	3%
मंगल	31/12/2057	86%	89%	81%	28%	89%	54%	61%	53%	41%
राहु	01/01/2076	67%	70%	56%	52%	83%	61%	67%	78%	3%
गुरु	01/01/2092	86%	89%	75%	28%	95%	34%	61%	66%	28%
शनि	02/01/2111	67%	70%	56%	58%	83%	61%	73%	72%	3%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/06/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
अशुभ
सम
शुभ
शुभ

क्षेत्र

पराक्रम
सुख हानि
सन्तति कष्ट
दम्पति
धनार्जन

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल चन्द्रकुंडली में अष्टम भाव में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। आपकी चन्द्रकुंडली में शास्त्रानुसार मंगली दोष भंग हो जाता है। अतः आपको इसके अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे। इससे आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बिना किसी विघ्न बाधा के यथोचित समय पर सिद्ध होते रहेंगे। विवाहोपरांत यदा कदा मध्यम रूप से पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है लेकिन इससे कोई हानि नहीं होगी। इसके शुभ प्रभाव से आप उत्तम शिक्षा प्राप्त करेंगे तथा भाई बहनों से भी जीवन में पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करेंगे। इस प्रकार आपका सम्पूर्ण जीवन सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेगा।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए सामान्यतया शुभ रहेगा परन्तु इसके प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब अवश्य होगा लेकिन विवाह कार्य अत्यंत ही शान्त एवं सुखद वातावरण में सम्पन्न होगा। इसमें आपको किसी भी प्रकार से व्यवधान या समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। विवाह के पश्चात आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। परन्तु यदा कदा पत्नी के स्वास्थ्य में दुर्बलता आ सकती है। लेकिन आपके अन्य सभी महत्वपूर्ण कार्य बिना किसी व्यवधान के सम्पन्न होंगे फलतः दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल अष्टम भाव में स्थित है। अतः आपके सभी व्यापारिक सांसारिक सामाजिक तथा पारिवारिक कार्य बिना किसी आवश्यक विघ्न बाधाओं तथा समस्याओं के सम्पन्न होते रहेंगे परन्तु यदा कदा पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके लाभ मार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। जीवन में आर्थिक स्थिति हमेशा सुदृढ़ रहेगी जिससे धन वैभव का कभी भी अभाव नहीं रहेगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आप बिना किसी विघ्न बाधा के अपनी शिक्षा पूर्ण करेंगे। साथ ही आप पारिवारिक सुख को भी

प्राप्त करेंगे एवं परिवार में हमेशा सुख शान्ति बनी रहेगी। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा जीवन में भाई बहनों के सुख तथा सहयोग को प्राप्त करने में भी आप एक भाग्यशाली पुरुष होंगे। अतः मंगल के इस शुभ प्रभाव से आप सामान्यतया शान्ति एवं आनंद पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय एवं आनंदमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसी गैरमांगलिक या मांगलिक कन्या से शादी करनी चाहिए जिसकी कुंडली में नियमानुसार मांगलिक योग भंग हो रहा हो। इस प्रकार से यदि आप विवाह करेंगे तो आपका दाम्पत्य जीवन अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा तथा सर्वत्र शुभ प्रभावों में भी वृद्धि होगी जिसके द्वारा आप सभी प्रकार से जीवन में सुख संसाधन धनऐश्वर्य एवं प्रतिष्ठा को प्राप्त करने में सफल रहेंगे। समाज में एक प्रतिष्ठित तथा यशस्वी पुरुष के रूप में सम्माननीय समझे जाएंगे।

इसके अतिरिक्त जन्मपत्री मिलान के समय यदि कन्या की कुंडली में अष्टम भाव में ही मंगल हो तो यत्न पूर्वक ऐसे विवाह की उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि समान भावों में मंगल के रहने से आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान आएंगे तथा इसका दुष्प्रभाव आप दोनों के स्वास्थ्य पर भी पड़ सकता है जिससे दाम्पत्य सुखोपभोग में आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। अन्य भावों में स्थित मंगल प्रायः शुभ फल ही प्रदान करेगा अतः सावधानी पूर्वक एवं सोच विचार कर अन्तिम निर्णय लेना चाहिए जिससे जीवन में अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो। साथ ही दाम्पत्य जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत हो सके।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाग्यवान्, सम्पत्तिवान्, मुखरोगी, झगड़ालू, नेत्रकर्णदन्तरोगी, राजभीरु, घरेलू जीवन दुःखी एवं स्त्री के लिए कुटुम्बियों से झगड़ने वाला होता है।

वृष राशि में रवि हो तो जातक शान्त, व्यवहार कुशल, पाप भीरु, स्वाभिमानी मुखरोगी एवं स्त्रीद्वेषी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प मात्रा में शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होती रहेगी। आपके प्रति उनका प्रेम भाव रहेगा तथा विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही वे समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप भी उनका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेद होने से विवाद आदि की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय पश्चात सब कुछ ही ठीक हो जाएगा।

चन्द्र

चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, रोगरहित, राजद्वेषवर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी एवं बुद्धिमान होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान्, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में होने से माता का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके प्रति उनका प्रगाढ़ स्नेह रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार की सुख सुविधाएं तथा अन्य सुखों को वे आपको प्रदान करेंगी। आपके मध्य मतभेद अल्प ही रहेंगे अतः परस्पर संबंध मधुर रहेंगे। साथ ही वाहनादि की प्राप्ति में भी वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा कभी भी कोई कठिनाई का सामना नहीं करने देंगी।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा एवं निर्देशों को मानने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही अपने जीवन काल में उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे तथा आवश्यक सुखसुविधाओं को भी प्रदान करेंगे। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध मधुर एवं सुदृढ़ रहेंगे तथा जीवन को प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, कोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

कुम्भ राशि में मंगल हो तो जातक व्यसनी, लोभी, सटटे से धननाशक, आचारहीन, मत्सरवृत्ति एवं बुद्धिहीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान्, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

मेष राशि में बुध हो तो जातक चतुर, प्रेमी, सत्यप्रिय, नट, रतिप्रिय कृशदेही, लेखक, ऋणी, मिलनसार, अविश्वस्त एवं बुरे विचार वाला होता है।

गुरु

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

शुक्र

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ,

मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

वृष राशि में शुक हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्रकामुक, शौकीन तबीयत, संगीत-नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि एवं आलसी होता है।

शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

मिथुन राशि में शनि हो तो जातक दुराचारी, कपटी, कामी, पाखण्डी, निर्धन, दुःखी एवं संकीर्ण मन वाला होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

वृष राशि में राहु हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरूप, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं धनी होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

वृश्चिक राशि में केतु हो तो जातक धूर्त, वाचाल, कुष्ठरोगी, क्रोधी निर्धन एवं व्यसनी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(01/01/2015 - 01/01/2035)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 01/01/2015 को आरम्भ होकर 01/01/2035 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में शुक्र द्वितीय भाव में है। यह एक शुभ ग्रह है जिसकी सामान्यतया दो राशियाँ हैं- वृष और तुला। इसकी मूल त्रिकोण राशि तुला है। यह मीन राशि में उच्च का तथा कन्या राशि में निम्न का होता है। यह आनन्द, प्रेम-संबंध, स्वाद तथा फैशन डिजाइनिंग का द्योतक है। यह आपकी कुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है तथा इसकी अष्टम भाव पर दृष्टि है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। द्वितीय भाव धन, लाभ, जगत्वापी यश, अधिकार, दाहिना नेत्र, याददाश्त, कल्पना शक्ति, जिह्वा, दाँत, ठोड़ी तथा पारिवारिक सदस्य का द्योतक है। यह मृत्यु का भाव या मारक स्थान भी कहलाता है।

स्वास्थ्य :

महादशेश शुक्र द्वितीय भाव, जो धन, परिवार, तथा जगत्वापी स्रोत का द्योतक है, द्वितीय भाव में स्थित है तथा इस भाव को बली कर रहा है जिसके फलस्वरूप इस दशा काल में आपके साथ कोई बड़ी घटना या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ संपत्ति :

इस दशा काल में, जो आपके पक्ष में है, आपको चल तथा अचल संपत्ति अर्जित करने का अवसर मिलेगा। आपके व्यय में वृद्धि हो सकती है। स्त्री से या विवाह से तथा दूसरों के सहयोग से भी धन की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

आप व्यावसायिक स्तर पर सुभ्यस्त रहेंगे तथा वही व्यवसाय अपनाएंगे जिसमें आप उन्नति कर सकते हैं। नौकरी में पदोन्नति के कुछ अवसर मिलेंगे और इस प्रकार आप अपने भविष्य में उन्नति करेंगे। आपको क्रियात्मकता या फैशन डिजाइनिंग से संबंधित काम करने के कुछ अवसर मिल सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

आपको विवाह में या जीवन साथी से धन की प्राप्ति होगी। आपका पारिवारिक जीवन बहुत ही सफल तथा खुशहाल होगा। आपके जीवन साथी आपका बहुत ही सहयोग करेंगे तथा आपका पारिवारिक जीवन बहुत उत्साहपूर्ण होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

यह दशा काल आपकी शैक्षिक तथा प्रशिक्षण गतिविधियों के लिए शुभ होगा।

अंतर्दशा :- शुक्र - राहु
(02/03/2022 - 02/03/2025)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 01/01/2015 को प्रारंभ होकर 01/01/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 3 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 02/03/2022 को प्रारंभ होकर 02/03/2025 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है। इसका शुभ/अशुभ प्रभाव इसकी स्थिति, भाव और राशि के अनुसार होता है।

इस अवधि में आप अधिकतर घर और परिवार से दूर रहेंगे। कटुवाणी के कारण पारिवारिक जीवन कष्टप्रद हो सकता है। धन और संसाधन पर्याप्त होंगे मगर कंजूसी से पैसा खर्च करेंगे।

आर्थिक मामलों में अनिश्चितता रहेगी। मित्रों और व्यापार के कारण धन का लाभ/हानि होंगे। कोई घटना अचानक घट सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, दूध और गंगाजल से धोकर, प्रार्थना उपरांत बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में रात्रि भोजन के उपरांत धारण करें।

अंतर्दशा :- शुक्र - गुरु
(02/03/2025 - 01/11/2027)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 01/01/2015 को आरंभ हुई थी और 01/01/2035 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 02/03/2025 को प्रारंभ होकर 01/11/2027 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 8, 10, 12 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप दार्शनिक स्वभाव के, विद्वान और प्रसन्न व्यक्ति होंगे। प्रशासकगण आपसे प्रसन्न रहेंगे। शत्रुओं का विनाश करेंगे, धर्म में रुचि होगी, सम्मान बढ़ेगा,

भाग्यशाली रहेंगे। घरेलू वातावरण शांतिपूर्ण रहेगा। अध्यात्म में रुचि रहेगी।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार को प्रातःकाल पूजा के उपरांत बृहस्पति का मंत्र 99 बार पढ़कर दाहिने हाथ की तर्जनी में धारण करें।

अंतर्दशा :- शुक्र - शनि
(01/11/2027 - 01/01/2031)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती हैं। आपके लिए यह 01/01/2015 को प्रारंभ हुई थी और वद 01/01/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 01/11/2027 को प्रारंभ होकर 01/01/2031 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

तृतीय भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 5, 9, 12 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप निर्दयी मगर साहसी हो सकते हैं। धनी बनेंगे, सरकार से सम्मान मिलेगा। बहुत सारे लोगों को संरक्षण प्रदान करेंगे। सफलता मिलेगी, मगर बाधाओं को पार करने के बाद। मन उदास या चिंतित रहेगा। वक्त गुजरने पर सुधार आएगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए सोने या चांदी की अंगूठी में पूजा के उपरांत शनिवार के दिन रात्रिभोजन के बाद मध्यमा अंगुली में नीलम धारण करें।